SHRI G. RAMACHANDRAN : Madam he h is not answered my question. I wanted to know if there will be a distinction between the rich and the poor.

PROF. V. K. R. V. RAO : I have answered that, Madam.

SHRI ARJUN ARORA : It is strange that this particular Minister pleads financial stringency. He was once upon a time a Professor of Economics, and he should know...

SHRI A. D. MANI : He has forgotten it.

PROF. V. K. R. V. RAO : Thank you, Mr. Mani.

SHRI ARJUN ARORA : He is not a person to forget anything, not even Mr. Mani.

SHRI MULKA GOVINDA REDDY : There is a vacancy now.

SHRI ARJUN ARORA : May I know if the economics of free compulsory education for all boys and girls up to the age of 14 has been worked out by the Government? If so, what will be the cost and why can't money be printed for this purpose at Nasik?

PROF. V. K. R. V. RAO : I do not think Government, Madam, have worked out these figures but there are some tentative figures regarding the cost of extending free compulsory education to children up to the age of 14. I am speaking from memory ; I think it would involve something like Rs. 260 crores more.

SHRI ARJUN ARORA : Not much.

PROF. V. K. R. V. RAO : Regarding the other question whether notes could not be printed, I am sure the hon. Member would not like me to do so even if I had the power.

SHRI B. K. KAUL : I would like to know if the Government proposes to amend the Directive Principles in the Constitution regarding free education.

PROF. V. K. R. V. RAO : I have no such proposal, Madam. But I think I may explain that the proportion of people with what may be called high incomes will actually depend upon what we mean by high income. If, for example, we take Rs. 3,000 a year as moderate income the number of parents whose income will exceed Rs. 3,000 and whose children will be going to primary schooJs will not be very high.

The administrative problem of differentiating between children of those parents and children of parents whose income is below Rs. 3,000 would become very difficult. I do not think.. .*{Interruption).* If I may complete my answer...

SHRI B. K. KAUL : He has not followed my question...

PROF. V. K. R. V. RAO : What is the question?

SHRI B. K. KAUL : I would like to know whether they propose to amend the Directive Principles of the Constitution regarding free primary education or otherwise to boys and girls.

PROF. V. K. R. V. RAO : I think I have answered it. Government have no such proposal.

फैरर बहिष्कार समिति के आरोप

*613. श्री ना० कृ० शेजवलकर : †
श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :
श्री प्रेम मनोहर :
श्री सुन्दर सिंह भंडारी :
श्री पीताम्बर दास :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि फैरर बहिष्कार समिति नामक एक समिति ने एक ज्ञापन में आरोप लगाया है कि फादर फैरर ने महाराष्ट्र में 76 लाख रुपये के विदेशी धन का उपयोग किया, 30 हजार व्यक्तियों को ईसाई बनाया और 284 किलोग्राम डायनामाइट एकत्र कर लिया था; और

(ख) यदि हां, तो इस बारे में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ;

fThe question was actually asked on the floor of the House by Shri N. K. Shejwalkar.

t [ALLEGATIONS BY THE FERRER BOYCOTT COMMITTEE

613.SHRI N.K.SHEJWALKAR: †
SHRI J.P.YADAV:
SHRI PREM MANOHAR :
SHRI SUNDAR SINGH BHANDARI :
SHRI PITAMBER DAS :

Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state :

(a) whether it is a fact that a committee known as Ferrer Boycott Committee has in a memorandum alleged that Father Ferrer used Rs. 76 lakhs of foreign money in Maharashtra, converted 30 thousand persons to Christanity and had accumulated 284 kilograms of dynamite; and

(b) if so, what is the reaction of Government in this regard ?]

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : (क) जी नहीं, महोदया।

(ख) प्रश्न नही उठता।

t[THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA) : (a) No, Madam.

(b) Does not arise.

श्री ना० कृ० शेजवलकर : मैं यह जानना चाहता हूं कि महाराष्ट्र प्रदेश से फैरर साहब को बाहर निकालने का जब आर्डर दिया गया था तो यह उनकी एंटी-नेशनल एक्टीविटीज के कारण देना पड़ा था या सरकार के लिये और कोई कारण था ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : जी हां, कुछ उनकी आपत्तिजनक कार्यवाही थी जिसके कारण महाराष्ट्र सरकार ने यह कहा कि उनको वहां रहने नहीं दिया जाये और इसी कारण उनसे कहा गया था कि वह महाराष्ट्र छोड़ कर चले जायें।

t[ ] English translation.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri N. K. Shejwalkar.

श्री ना० कृ० शेजवलकर : मैंने राष्ट्र-विरोधी शब्द का प्रयोग किया था और पूछा था कि उन्होंने ऐसी कोई कार्यवाही की थी ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : मैं कहना चाहता कि कोई भी आपत्तिजनक कार्यवाही की जाये तो वह राष्ट्र-विरोधी होती है। ऐसा नही है कि वह राष्ट्र-विरोधी कार्यवाही नहीं थी।

श्री ना० कृ० शेजवलकर : मैं यह जानना चाहता हूं, जैसा कि आपने बताया कि उनकी राष्ट्र-विरोधी कार्यवाहियां हैं और जैसा कि हेनरी सेड्रिज नाम के जो लेखक हैं उन्होंने अपना एक लम्बा लेख लिखा है : सोसाइटी आफ जेसस, और जो समाचार-पत्र मंगलौर से प्राप्त होता है उसमें यह है और उन्होंने फादर फैरर के राष्ट्र-विरोधी स्वरूप की तमाम एक्टीविटीज पर प्रकाश डाला है और उनको शीघ्रातिशीघ्र भारत से निकालने की मांग की है, क्या इसकी सरकार को पूरी जानकारी है और इसके बारे में आपका क्या विचार है ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : फादर फैरर के सम्बन्ध में इस तरह की जो बातें हुई हैं उनकी जानकारी हमें समय समय पर मिलती रहती है, परन्तु इसके बारे में जो हमने जांच-पड़ताल की और जो उसके विभिन्न पहलुओं पर सोच-विचार किया गया तो हमने यह तय पाया कि यदि महाराष्ट्र सरकार नहीं चाहती है तो इन्हें महाराष्ट्र में न रहने दिया जाये और यदि उनको और कहीं काम करने की इजाजत मिलती है और वहां की स्थानीय सरकार इसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं देखती तो उनको वहां काम करने दिया जाये और देखा जाये कि किस तरह का काम करते हैं और यदि वहां भी कोई आपत्तिजनक कार्यवाही हो, जिससे हम समझते हैं कि जन-हित को हानि पहुंचेगी तो हम उनके खिलाफ तुरंत ही कार्यवाही करेंगे।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मंत्री महोदय ने अभी कहा कि विदेशी का जो आपत्तिजनक कार्य होता है वह राष्ट्र-विरोधी होता है, तो जब एक बार राष्ट्र-विरोधी फादर फैरर का

कार्य साबित हो गया तो फिर उनको एक प्रदेश में करने की छूट बन्द कर के दूसरे प्रदेश में छूट देने की जो बात है उसमें सरकार की क्या मंशा है ? मैं दूसरा प्रश्न यह पूछना चाहता हूं कि क्या कोई भी ऐसे देश हैं, चाहे रूस हो, चीन हो या और इस तरह के साम्यवादी देश हों जहां कि इस तरह से जिस तरह से कि हिन्दुस्तान में विदेश के लोगों को अपने देश के लोगों का धर्म-परिवर्तन करने की सुविधा है और आर्थिक और दूसरे तरीके से इसके लिये प्रलोभन देने की छूट है वह है ? भारत में राष्ट्र-विरोधी विदेशी धर्म प्रचारकों की संख्या 5,049 है ौर इनका सम्बन्ध 54 देशों से है, इनमें 1,363 अमेरिकन हैं, स्पेन के 648, इटली के 564, ब्रिटेन के 531, फ्रांस के 378, जर्मनी के 327, बेल्जियम के 270, कनाडा के 180, स्विस 127 और डची 125 हैं । तो इस तरह के जो सारे लोग हैं ऐसे लोग क्या और किसी देश में हैं जो कि राजनैतिक अड्डेबाज़ी कर के राष्ट्र-विरोधी कार्य करें, जैसे कि नागालैंड को देश के खिलाफ तैयार करना या फीज़ो ऐसे लोगों को यहां से ले जा कर इंग्लैंड में हिन्दुस्तान के खिलाफ तैयार करते रहना या नागालैंड के ौर लोगों को ले जा कर हिन्दुस्तान के खिलाफ तैयार करना, जिससे कि इस देश में विदेशियों का राजनैतिक प्रभुत्व बना रहे और भारतवर्ष उनकी ओर देखता रहे ? तो इस पर सरकार ने क्या विचार किया है ? फादर फैरर तो उसके एक लिंक हैं ।

श्री विद्या चरण शुक्ल : माननीय सदस्य ने जो प्रश्न पूछा है उसके संदर्भ में मैं यह कहना चाहता हूं कि एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने का जहां तक सवाल है इसमें कोई आरोप सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है, उनके प्रति कुछ ऐसी आपत्तियां उठाई गई थी कि उनकी कार्यवाही महाराष्ट्र राज्य में ठीक नहीं हो रही है इसलिये हमने सोचा कि जब राज्य सरकार इस पक्ष में नहीं है कि फादर फैरर को वहां रहने दिया जाये तो हमने उनको कहा कि उस राज्य को छोड़ कर चले जायें और दूसरे राज्य की सरकार ने, जो इन सब बातों को जानती थी कि क्या हुआ और क्या आपत्ति है, जब कहा कि हमें इस बात में आपत्ति नहीं है कि वह यहां आ कर काम करें तो हमने उनको वहां रहने की इजाज़त दे दी ।

जहां तक कि माननीय सदस्य का यह पूछना है कि रूस, चीन इत्यादि ऐसे देशों में धर्म-परिवर्तन की इजाज़त है या नहीं, तो मैं उनको बताना चाहता हूं कि जहां पर भी प्रजातांत्रिक गणतंत्र चल रहा है या प्रजातांत्रिक संस्थाएं चलती हैं वहां पर धर्म-परिवर्तन के ऊपर कोई रोक नहीं रहती है ।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : हमने कहा कि फादर फैरर एक लिंक हैं, विदेशी शक्ति के द्वारा, उस शक्ति के प्रेशर में पड़ कर के, इन ईसाई पादरियों, विदेशी पादरियों को काम करने दे रहे हैं और फादर फैरर को विदेशियों के प्रेशर के कारण ही रखा है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: No reply. Only one supplementary each.

श्री प्रेम मनोहर : क्या सरकार की जानकारी में यह है कि फारेन मिशनरीज़ जो आते हैं वह पैसे का प्रलोभन दे कर यहां पर लोगों का धर्म-परिवर्तन करते हैं और राष्ट्र-विरोधी कार्य करते हैं । अभी दो साल पहले जब बिहार में अकाल पड़ा था उस समय गया में, पटना में, खुले तौर पर फारेन मिशनरीज़ पैसा दे कर के, खाना दे कर के धर्म-परिवर्तन कर रहे थे और राष्ट्र-विरोधी कार्य कर रहे थे । और अभी जो क्रिश्चियन कांफ्रेंस हुई थी उसमें भी वहां एक प्रस्ताव पारित किया गया कि फारेन मिशनरीज़ को हिन्दुस्तान में नहीं आने दिया जाये ।

श्री विद्या चरण शुक्ल: इस तरह की शिकायतें कभी कभी हमारे पास अवश्य आती हैं कि प्रलोभन दे कर के धर्म-परिवर्तन किया जाता है और जब ऐसी शिकायतें आती हैं तो उनकी तुरंत ही जांच-पड़ताल करते हैं और अगर शिकायत में कोई तथ्य पाया जाता है तो उसके लिये कार्यवाही भी करते हैं । और मैं माननीय सदस्य को यह कहना चाहता हूं कि किसी भी

दबाव में आ कर हम कोई निर्णय नहीं लेते, और न कोई कार्यवाही करते हैं।

श्री राजनारायण : दबाव की बात तो आप जानते ही नहीं।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : मेरा निवेदन है कि फादर फैरर के सम्बन्ध में कोई मुकद्दमा नहीं चला, फादर फैरर के सम्बन्ध में महाराष्ट्र सरकार ने उनकी कार्यवाही के ऊपर आपत्ति की, तो वह कार्यवाही केवल महाराष्ट्र की राज्य सरकार के विरोध में थी, क्या यही उनकी आपत्ति थी, या फादर फैरर की गतिविधियां महाराष्ट्र में रहते हुए इस प्रकार की थी कि जो सारे देश के लिये आपत्तिजनक मानी जा सकती थीं ? इस सम्बन्ध में क्या महाराष्ट्र सरकार ने केन्द्रीय सरकार को सूचना दी और उसी आधार पर केन्द्रीय सरकार ने भी उनको महाराष्ट्र से बाहर भेजे जाने का निश्चय लिया, तो जिस आधार पर या जिस प्रकार के काम मे इंडल्ज करने के कारण फादर फैरर को महाराष्ट्र छोड़ने के लिये बाध्य किया गया। भविष्य के लिये उनके व्यवहार के सम्बन्ध में कौन-सी जांच हुई या कोई गारंटी मिली कि अब आंध्र में रहने के बाद वह उस प्रकार की हरकतें नहीं करेंगे जिसका आरोप उन पर महाराष्ट्र में लगाया गया था और इस वजह से उनको आंध्र में बसने की इजाज़त दी गई ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : जो फादर फैरर की कार्यवाहियां थीं वह राज्य सरकार के खिलाफ ही नहीं थी वह कार्यवाहियां जन-हित के खिलाफ मानी गई थी और राज्य सरकार ने जो सूचनायें हमें भेजी थी उसके अनुसार हमने इस बात का निर्णय लिया कि उन्हें महाराष्ट्र में न रहने दिया जावे और जब उनके आंध्र प्रदेश में जाने का सवाल उठा तब ऐसी कोई उनसे गारंटी या ऐसा कोई उनसे आश्वासन नहीं मांगा गया कि वह ऐसी कार्यवाही करेंगे या नहीं करेंगे। तब हमें इस बात का एक निर्णय लेना था, विशेष कर के राज्य सरकार को निर्णय लेना था कि इस तरह की कार्यवाही के अन्तर्गत जिस व्यक्ति को एक जगह से दूसरी जगह हटाया जा रहा है उसे वहां आ कर काम करने की सुविधा दी जाये या नहीं दी जाये और तब उस सरकार ने इस बात को कहा कि उनको कोई आपत्ति नहीं है और इस बारे में वह एक परीक्षण करने को तैयार हैं कि वह वहां आ कर काम करें और यदि ठीक से काम करते हैं तो उस पर कोई आपत्ति नहीं करनी चाहिये, तो हम लोगों ने उसके बारे में कोई आपत्ति नहीं की। और मैं माननीय सदस्य से कहना चाहता हूं कि उनकी कार्यवाहियों के ऊपर या उनकी गतिविधियों के ऊपर हमारा ध्यान है और यदि ज़रा भी आपत्तिजनक कार्यवाही उन्होंने की तो हम लोग उचित कार्यवाही अवश्य करेंगे।

SHRI A. D. MANI: Madam, may 1 ask the Minister whether it is not a fact that many Hindu Missions are functioning in the United States and no restrictions have been placed on the working of these Missions, and that it will be very bad for reciprocity if we try to discriminate against any particular foreign Mission in our country? I want to ask him as a matter of policy I am asking a question, you are not hearing the question.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : Your question is not dear.

SHRI A. D. MANI: I am asking whether it is not a fact that many Hincil Missions are allowed to function in the United States and in Europe without any restriction being placed on their activities and that on grounds of reciprocity it will look very odd to place restrictions on the activities of foreign Missions in this country.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : The entire premise of the hon. Member's question is completely wrong. There is no restriction whatsoever on the legal and proper functioning of any Missionaries here if they function within the four corners of the law and social ethics. Here there would be no restriction. Whenever the social ethics and the laws are violated, then only action is taken; otherwise not.

(Several hon. Members stood up)

THE DEPUTY CHAIRMAN: If yo want, we can spend another half an hoi' on this. We have already spent ten miiu tes. Mr. Roy.

SHRI KALYAN ROY : Is it a fact that because of the pressure brought by His Holiness The Pope Father Ferrer was allowed to return to India?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : I have already answered this question. We do not work under pressure.

SHRr ARJUN ARORA : To put the record straight, may J know if it is not a fact that there was a considerable section of public opinion in Maharashtra which wanted Father Ferrer to stay and work in Maharashtra, and which was impressed by his work in the field of agriculture ?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : The vast majority of public opinion was in favour of removing Father Ferrer from Maharashtra. There was also a small minority of opinion which wanted him to return there.

SHRI JOACHIM ALVA : What is the real policy of the Government about Father Ferrer and the obnoxious journal which he started 'Orbit' ? 'Orbit' is a journal which runs cantankerous articles against the Prime Minister, against the Congressmen and against India's declared policy of non-alignment. From where does the money come for this paper? Secondly, when Father Ferrer became such a controversial figure, almost politically obnoxious, and a wrong symbol of resistance by my fellow—Roman Catholics— I am a practising Roman Catholic— how does he become so decent and patriotic and law-abiding in Andhra Pradesh next door when he was sent out from Maharashtra? Why does the Government forbid him from staying in India altogether? Why does he quit India? In the entire Jesuit order of which Father Ferrer is a member, there has not been a single man whose conduct has been so objectionable as his. Jesuits have founded great colleges in India. I am their product as well as hundreds of others in Bombay, Madras and Calcutta.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Please put a question.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL : We must sympathise with the lot. . .

SHRI JOACHIM ALVA : Your party backed him up.

(Interruption)

When Father Ferrer became such a controversial figure in the city of Bombay, it was your business to clear him out of India. From where does he get the money?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: We have nothing against the Roman Catholics or the Jesuits as such. We have nothing against them. They have contributed very usefully to our national life. As far as Father Ferrer is concerned there were certain adverse reports against his activities. Therefore, we had to take action against him.

SHRI A. G. KULKARNI : May I know from the Government whether it is not a fact that in view of Father Ferrer's unpatriotic activities or anti-national activities the Maharashtra State recommended his expulsion ? But besides that, is it a fact that the Government knows that Father Ferrer has distributed funds to the .political parties in Maharashtra ? If so, what are the names of those p< litical parties who are supporting Father Ferrer in this affair ?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : *I* would say that Father Ferrer did indulge in objectionable activities and the Maharashtra Government did not want him to continue there. Therefore, we took action to remove him from there. I r'o not think it will serve any public interest . .

SHRI A. G. KULKARNI : I want to know the names of the political parties which have received money from Father Ferrer. I want to know that.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : I would like to say, Madam, that Father Ferrer did indulge in unethical and unnecessary political activities, and therefore we had to take action. I do not think I am called upon to say anything more about it.

SHRI A. G. KULKARNI : Madam, I want your protection. Is it not a fact that the political life of this country is being vitiated by these anti-national Christians who are coming into this country, and spending political money? As has been rightly pointed out by Mr. Alva the anti-national Christian people are running newspapers criticising the progressive measures of the Government . . *i*

SHRI KRISHAN KANT : What are the names of the political parties?

SHRI A. G. KULKARNI : The Minister should be called upon to disclose the names of the political parties.

SHRI KALYAN ROY : Why does he say always anti-national Christians?

THE DEPUTY CHAIRMAN : I think the Minister has given his reply. Mr. Rajnarain.

श्री राजनारायण : मैडम, हमारी मुसीबत देखिये, आप हमको बुलाती हैं और वह लोग पहले खड़े हो जाते हैं।

उपसभापति : टाइम नहीं है। क्वेश्चन पूछिये।

श्री राजनारायण : मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि सरकार को क्या आपत्ति है श्री अल्वा साहब के सवाल का जवाब देने में कि यह फादर फैरर के पास पैसा कहां से आता है और क्या यह सरकार इस देश की राजनैतिक स्थिति को कई घरों में बांटना चाहती है ? अगर फादर फैरर की एक्टिविटीज़ महाराष्ट्र में खराब थी तो आन्ध्र की सरकार क्यों उसको उपयोगी समझती है ? क्यों उसकी एक्टिविटी को चैलेंज नहीं किया जा रहा है। मैं देखता हूं कि उनकी एक्टिविटी गाजीपुर जा रही है, गाजीपुर से गोरखपुर जा रही है, वहां से बलिया जा रही है, हर राज्य में जहां पिछड़ा इलाका है, वहां उन्होंने अपने संबंधों को बना रखा है।

श्री विद्या चरण शुक्ल : जहां तक पैसे आने का सवाल है, पैसे का तो विवरण हमारे पास है। मैं उसको दे सकता हूं कि कहां से और कितना पैसा आया। जहां तक उनको महाराष्ट्र से निकाले जाने का सवाल है इसके बारे में मैं पहले भी कई बार कह चुका हूं. अभी भी मैंने यहां बतलाया कि महाराष्ट्र से अलग करके आंध्र प्रदेश में जाने की इजाजत दी। मैं इसको पहले कह चुका हूं। जहां तक यह सवाल है कि पैसा कहां से आया तो वह सूचना मैं दे सकता हूं : ए० एफ० सी० आर० ओ० से उनको 1,75,000 रु० मिला, इण्डो-जर्मन सोशल सर्विस सोसाइटी से 17,91,400 रु० मिला, कैथोलिक चैरिटीज़ (इंडिया) से 17,91,400 रु० मिला, वीमेन कैथोलिक असोसियेशन (मैड्रिड) स्पेन से 10,00,000 रु० मिला और कैथोलिक रिलीफ सर्विस, दिल्ली से 33,12,443 रु० मिला।

†राष्ट्रीय भाषा परिषद् द्वारा किया गया कार्य

***536. श्री मानसिंह वर्मा :** क्या शिक्षा तथा युवा सेवा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राष्ट्रीय भाषा परिषद् की बैठकें स वर्ष किस-किस तारीख को हुई और उसने अब तक जो कार्य सम्पादित किए उनका ब्यौरा क्या है ; और

(ख) राष्ट्र भाषा हिन्दी का व्यवहार बढ़ाने में समिति और उसके अध्यक्ष की भूमिका अब तक क्या रही है ?

T[WORK DONE BY RASHTRIYA BHASHA PARISHAD

536. SHRI MAN SINGH VARMA : Will the Minister of EDUCATION AND YOUTH SERVICES be pleased to state:

(a) the dates on which the meetings of the Rashtriya Bhasha Parishad were held during the current year and the details of the work done by it so far; and

(b) the role of the said Committee and its Chairman so far in promoting the use of the National Language Hindi?]

शिक्षा तथा युवा सेवा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भक्त दर्शन) : (क) और (ख) राष्ट्रीय भाषा परिषद् नामक किसी संस्था की शिक्षा तथा युवा सेवा मंत्रालय को कोई जानकारी नहीं है।

श्री मानसिंह वर्मा : मैडम, इस प्रश्न में असल में थोड़ा-सा भ्रम हो गया। वास्तव में यह राष्ट्रीय

t[THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND YOUTH SERVICES (SHRI BHA-KT DARSHAN) : (a) and (b) The Ministry of Education & Youth Services have no information about any institution known as the Rashtriya Bhasha Parish id.]

tTransferred from the 14th August, 1969.

t[ ] English translation.